ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों को रोज2 सावधानी जरूर देनी होती है। कौन सी? सेफ्टी फर्स्ट। सेफ्टी क्या है? याद की यात्रा से। तुम बहुत सेफ रहते हो। मूल बात है बच्चों के लिये यह। बाप ने समझाया है तुम बच्चे जितना याद की यात्रा में तत्पर रहेंगे उतनी खुशी भी रहेंगी और मैनर्स, चलन, कैरेक्टर्स भी ठीक रहेंगी। क्योंकि पावन भी बनना है। कैरेक्टर्स सुधारना है। अपनी जांच करनी है मेरा कैरेक्टर्स किसको दुःख देने जैसा तो नहीं है। या कोई देह-अभिमान तो नहीं आ जाता है। यह अच्छी रीत अपनी जांच करनी है। बापदेठ बच्चों को पढ़ाते हैं। तुम बच्चे पढ़ते भी हो फिर पढ़ाते भी हो। बेहद का बाप सिर्फ पढ़ाते हैं। बाकी तो सभी हैं देह-धारी। उसमें सारी दुनिया आ जाती है। एक बाप ही विदेही है। वह तुम बच्चों को कहते हैं कि तुमको भी विदेही बनना है। मैं आया हूं तुमको विदेही बनाने लिये। पवित्र बनकर ही वहां जावेंगे। छीछी को तो साथ नहीं ले जावेंगे। इसलिये पहले2 मंत्र ही यह देते हैं। माया को वस करने का मंत्र है, पवित्र होने का भी मंत्र है। इस मंत्र में बहुत खूबियां भरी हुई है। इनसे ही पवित्र बनना है। मनुष्य से देवता बनना है। जरूर हम ही देवी-देवता थे। इसलिये बाप कहते हैं अपनी सेफ्टी चाहो, मजबूत महावीर बनना चाहो तो यह पुरुषार्थ करो। बाप तो शिक्षा देते रहेंगे। ड्रामा अनुसार बिल्कुल ठीक हो चल रहा है। फिर आगे के लिये भी समझाते रहेंगे। याद की यात्रा में कमजोर नहीं बनना है। भल अन्दर घर में रहने वाले हैं परन्तु बहुत ही कच्चे हैं। बाप ने समझाया है बाहर रहने वाले अन्दर रहने वालों को जीत लेते हैं। अर्जुन का मिसाल है ना। वह फेल हो गया। बाहर वाला जीत गया। ऐसी कुछ कहानी है। बाहर वाले बांधेली गोपिकाएं खास कर के वह जितना याद करती हैं उतना घर में रहने वाले नहीं करते। क्योंकि उन्हों को तरफ्न रहती है शिव बाबा से मिलने की। जो मिल जाते हैं उनको जैसे पेट भर जाता है। वह बहुत याद करते2 बहुत ऊंच पद पा सकते हैं अन्दर वालों से। देखा जाता है अच्छे2 बड़े सेन्टर सम्भालने वाली मुख्य याद की यात्रा में कमजोर है। जोहर बहुत अच्छा चाहिए ज्ञान तलवार में। जोहर न होने कारण किसको तीर लगता ही नहीं, पूरा मरते ही नहीं। बच्चे कोशिश करते हैं ज्ञान का बाण लगाकर बाप का बनाने वा मरजीवा बनाने। परन्तु मरते नहीं हैं तो जरूर ज्ञान तलवार में गरबड़ है। बाबा भल जानते हैं ड्रामा बिल्कुल रॉयल चल रहा है परन्तु आगे के लिये समझाते तो रहेंगे ना। हरेक अपने दिल से पूछे हम कहांतक याद करते हैं। याद से ही बल आवेगा। इसलिये कहा जाता है ज्ञान तलवार में जोहर चाहिए। ज्ञान तो बहुत सहज रीति समझा सकते हो। जितना2 याद में रहेंगे उतना ही बड़े मीठे बनते जावेंगे। तुम सतोप्रधान थे तो बहुत मीठे थे। अभी फिर सतोप्रधान बनना है। बहुत मीठा बनना है। स्वभाव भी बहुत मीठा होना है। कब रंज न होना चाहिए। ऐसा वातावरण न हो जो कोई रंज हो। कोई भी रंज न हो ऐसी कोशिश करनी है। क्योंकि यह ईश्वरीय कालेज स्थापन करने की सर्विस बहुत ऊंची है। विश्व विद्यालय तो भारत में बहुत गाये जाते हैं। वास्तव में वह है नहीं। विश्व-विद्यालय तो एक ही होता है। बाप ही आकर सभी को मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं। बाप जानते हैं सारी दुनिया के जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी खत्म होने हैं। बाप को बुलाया भी इसलिये है कि इस छी छी दुनिया का खात्मा करो, नई दुनिया की स्थापना करो। बच्चे भी समझते हैं बरोबर बाप आया हुआ है। अभी माया का पम्प कितना है। फॉल आफ पॉम्पिया का खेल भी दिखाते हैं। बड़े2 मकान बन रहे हैं। यह है पम्प। सतयुग में इतने 18 मंजिल, 40 मंजिल का मकान नहीं बनते हैं। यहां बनते हैं क्योंकि जगह बहुत कम है रहने लिये। विनाश जब होता है तब शोभा भी पाते हैं। सभी बड़े2 मकान गिर पड़ते हैं। आगे इतने बड़े2 मकान नहीं बनते थे। बम्स जब छोड़ेंगे तो गिरेंगे ऐसे जैसे कि तास के पत्ते गिरते हैं। इनका मतलब यह नहीं कि यहां मरेंगे गिरेंगे बाकी दूसरे रह जावेंगे। नहीं। जो जहां होगा। चाहे समुद्र पर होगा, पृथ्वी पर होगा आकाश पर होगा, झाड़ों पर होंगे, उड़ते होंगे सभी खत्म हो जावेंगे। यह पुरानी दुनिया है ना। 84 लाख योनि हैं। यह सभी खत्म हो जाने वाले हैं। वहां नई दुनिया में कुछ होगा ही नहीं। न इतने मनुष्य होंगे, न मच्छर

(२५) 5-10-68

जोत आदि होंगे। यहां तो ढेर के ढेर हैं। अभी तुम बच्चे यह देवता बनते हो। तो यहां हर चीज़ सतोप्रधान होती है। यहां भी बड़े आदमी के घर में जावेंगे तो बड़ी सफाई आदि रहती है। तुम तो सबसे बड़े आदमी हो। बड़े देवता बनने वाले हो। बड़े आदमी भी नहीं कहेंगे। तुम बड़े देवताएं बनते हो। यह कोई नई बात नहीं। 5000 वर्ष पहले भी तुम बने थे नम्बरवार। यह इतना किचड़ा आदि वहां कुछ नहीं होगा। बच्चों को बड़ी खुशी होनी चाहिए हम बहुत ही बड़े ऊंच देवता बनते हैं। एक ही बाप हमको पढ़ाने वाला है जो हमको बहुत उच्च बनाते हैं। पढ़ाई में हमेशा नम्बरवार पोजीशन वाले होते हैं। कोई कम पढ़ते हैं, कोई जास्ती पढ़ते हैं। अभी बच्चे पुरुषार्थ कर रहे हैं, बड़े2 सेन्टर्स खोल रहे हैं इसलिए कि बड़ों को मालूम पड़े भारत का प्राचीन योग यह गाया जाता है। खास विलायत वालों को जास्ती उत्कंठा होती है राजयोग सीखने को। भारतवासी तो तमोप्रधान बुधि हैं, वह फिर भी तमो बुधि हैं। इसलिये उन्हों को शौक रहता है भारत का प्राचीन राजयोग सीखने। भारत का प्राचीन राजयोग नामी-ग्रामी है, जिससे ही भारत स्वर्ग बना था। बहुत थोड़े आते हैं जो आकर पूरी रीति समझते हैं। स्वर्ग अथवा हैविन फास्ट हो गया है, सो फिर होगा जरूर। हैविन अथवा पैराडाईज़ है सब से वन्डर ऑफ दी वर्ल्ड। स्वर्ग का कितना नाम बाला है। स्वर्ग और नर्क, शिवालय और वेश्यालय। तुम बच्चों को अभी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार याद है कि हमको शिवालय में जाना है। वहां जाने लिये शिव बाबा को याद करना है। वही पण्डा है सभी को ले जाने वाला। भक्ति को कहा जाता है रात। ज्ञान को कहा जाता दिन। रात और दिन में बहुत फर्क होता है ना। सो भी यह तो बेहद की बात है। नई दुनिया और पुरानी दुनिया में तो बहुत फर्क होता है। अभी देहली में बड़े2 मकान बन रहे हैं तो बच्चों की दिल होती है इतनी ऊंच ते ऊंच पढ़ाई उच्च ते उच्च मकान में हम पढ़ावें तो बड़े2 लोग जागेंगे। एक एक को बैठ समझाना पड़ता है। वास्तव में पढ़ाई वा शिक्षा देने लिये एकान्त में स्थान होते हैं। ब्रह्मज्ञानियों के भी आश्रम शहर से दूर2 होते हैं। और नीचे ही रहते हैं। इतने उच्ची मंजिल पर नहीं रहते हैं। अभी तो तमोप्रधान होने से शहर में अन्दर घूस पड़े हैं। वह ताकत खत्म हुई पड़ी है। इस समय सभी की बैटरी खाली हो गई है। सन्यासियों की बैटरी भी खाली है। अभी बैटरी को कैसे भरना है यह बाप के सिवाय कोई भी बैटरी चार्ज कर न सके। बच्चों को बैटरी चार्ज करने से ही ताकत आनी है। इसके लिये मुख्य है याद। इसमें ही माया के विघ्न पड़ते हैं। कोई तो सर्जन के आगे सच्च बताते हैं, कोई छिपा लेते हैं। अन्दर में जो खामियां हैं वह बाप को बतलाना पड़े ना। इस जन्म में जो पाप किये हैं वह अविनाशी सर्जन के आगे वर्णन करना चाहिए। नहीं तो वह दिल अन्दर खाता रहेगा। सुनाने के बाद फिर खावेगा नहीं। अन्दर ही रख देना वह भी नुकसान-कारक है। जो सच्चे2 बच्चे बनते हैं वह सभी बाप को बतला देते हैं। इस जन्म में यह यह पाप किये हैं। दिन प्रति दिन बाप जोर देते रहते हैं। यह तुम्हारा अन्तिम जन्म हैं। तमोप्रधान से पाप तो जरूर बहुत होते होंगे। बाप समझाते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त में जो नम्बरवन पतित है उनमें ही प्रवेश करता हूं क्योंकि इनको ही फिर नम्बरवन में जाना है। बहुत मेहनत करनी पड़ती है। इस जन्म में पाप किये हुये हैं तो कईयों को पता भी नहीं पड़ता है कि हम यह क्या करते हैं। सच्च नहीं बतलाते हैं। कोई2 सच्च बतला देते हैं। बाप ने समझाया है कर्म-इन्द्रियां शान्त तब होगी जबकि कर्मातीत अवस्था बनती है। जैसे मनुष्य बूढ़े होते हैं तो डिस-चार्ज आदि होना आटोमेटकली बन्द हो जाता है। इस ज्ञान में तो छोटेपन में ही सब बन्द हो जाना चाहिए। अगर योगबल में मज़बूत हो रहे तो तो इन सभी बातों कोअन्त हो सकती है। वहां कोई ऐसी गंदी बिमारी, किचड़-पट्टी आदि होती ही नहीं। मनुष्य ही बड़े ही साफ रहते हैं। वहां है ही राम-राज्य, यहां है रावण-राज्य। तो अनेक प्रकार के गंदगी आदि की बिमारियां हैं। सतयुग में यह कुछ भी होता नहीं। बड़ी ही सफाई रहती है। बातमत पूछो। नाम ही कितना फर्स्ट क्लास है स्वर्ग, हैवीन, नई दुनिया। बाप ने समझाया है भक्ति मार्ग को कहा जाता है ठगती मार्ग।—

बहुत ठगाया जाता है। बड़े-बड़े ठग होते हैं। उनका भी कोई दोष नहीं। पढ़ा तो समझते भी नहीं हैं। कोई ठग, पापात्मा हैं। बाप बैठ समझाते हैं। इस पुरुषोत्तम संगम युग पर ही तुम यह सभी बातें सुनते हो। कल नहीं सुनते थे। कल मृत्युलोक के मालिक थे, आज तुम अमरलोक के मालिक बनते हो। निश्चय हो जाता है कल मृत्युलोक में थे। अभी संगम युग पर आने से अमरपुरी में जाने लिये तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। पढ़ाने वाला भी अभी मिला है। अच्छी रीति पढ़ते हैं तो पैसा आदिभी कमाते हैं। बलिहारी पढ़ाई की कहेंगे। यह भी ऐसे हैं। इस पढ़ाई से तुम बहुत ही ऊंच पद पाते हो अभी तुम पुरुषोत्तम संगम युग पर हो। कल कलियुग में थे, आज यहां। रात दिन का फर्क पड़ जाता है। रात भक्ति मार्ग को कहा जाता है। ज्ञान बुधि में आ जाने से फिर भक्ति मार्ग आपेंही छूट जाता है। कहना नहीं पड़ता। कल तुम घोर-अंधियारी रात में थे। अभी तुम रोशनी में हो। यह भी सिवाय तुम बच्चों के और किसको मालूम नहीं है। तुम भी फिर घड़ी2 भूल जाते हो। पुरानी दुनिया में चले जाते हो। भूलना माना पुरानी दुनिया में चले जाना। अभी तुम संगमयुगी ब्राह्मणों को मालूम है, आत्मा जानती है हम कलियुग में नहीं हैं। यह तो सदैव ही याद रखना है। हम नये विश्व के मालिक बन रहे हैं। बाप हमको पढ़ाते ही हैं नई दुनिया में जीने लिये। यह है शुध अहंकार। वह है अशुध अहंकार। तुम बच्चों को तो कब अशुध ख्यालात भी नहीं आनी चाहिए। पुरुषार्थ करते करते आखीरीन पिछाड़ी में रिजल्ट निकलेगी। बाप समझाते हैं इस समय सभी पुरुषार्थी हैं। पढ़ रहे हैं। इम्तहान का समय अभी नजदीक होता जाता है। तो नम्बरवार पास हो फिर ट्रान्सफर हो जाते हैं। तुम्हारी है बेहद की पढ़ाई जिसको सिर्फ तुम ही जानते हो। तुम कितना समझाते हो। नये2 आते रहते हैं। बेहद के बाप से बेहद का वरसा पाने लिये भल दूर रहते हैं फिर भी सुनते2 निश्चय बुधि हो समझते हैं ऐसे बाबा के सम्मुख भी जाना चाहिए। जिस बाप ने बच्चों को पढ़ाया है ऐसे बाप से सम्मुख तो जरूर मिलना चाहिए। समझ कर के ही यहां आते हैं। कोई न समझे हुये हैं तो भी यहां आने से समझ जाते हैं। बाप भी कहते हैं दिल में कोई भी बात हो, कुछ समझ में न आता हो तो भल पूछो। बाप तो चकमक है ना। जिनकी तकदीर में है वह अच्छी रीत पकड़ लेते हैं। तकदीर में न है तो फिर खलास। सुना अनसुना कर देते हैं। तो यहां कौन बैठ पढ़ाते हैं? भगवान, जिसका नाम है शिव। शिव बाबा से हमको स्वर्ग की बादशाही मिलेगी। फिर कौन सी पढ़ाई ! तुम कहेंगे हमको शिव बाबा पढ़ाते हैं जिससे 21 जन्मों के लिये बादशाही मिलनी है। ऐसे2 समझाते2 ले आते हो। कोई पूरा न समझने कारण इतनी सर्विस नहीं कर सकते हैं। बन्धन के जंजीरों में जकड़े रहते हैं। शुरू में तुम कैसे अपने को जंजीरों से छुड़ाकर आये। जैसे कि कोई मस्ताने होते हैं। यह भी ड्रामा में पार्ट था तो कोशिश हुई। ड्रामा अनुसार भट्ठी बननी थी। जीते जी बने फिर कोई माया के तरफ चले गये। युध तो होती है ना। माया देखती है इसने बड़ी हिम्मत दिखाई है, तब हम भी ठोक कर देखते हैं कि पक्के हैं। कितनी बच्चों की सम्भाल होती थी। सभी कुछ सिखलाते थे। तुम बच्चे एलबम में चित्र आदि बैठ देखते हो। सिर्फ चित्र देखने से भी समझ न सके। कोई बैठ समझावे क्या क्या होता था, कैसे भट्ठी में पड़े थे। फिर कोई कैसे निकले, कोई कैसे। जैसे रुपये छपते हैं तो भी कोई2 खराब हो पड़ते हैं। यह भी ईश्वरीय मशीनरी है। ईश्वर बैठ धर्म की स्थापना करते हैं। यह बात किसको भी पता नहीं है। बाप को बुलाते भी हैं परन्तु जैसे कि तवाई। माया रावण उकदम तवाई बना देती है। शिव बाबा की पूजा भी करते हैं फिर कह देते हैं सर्वव्यापी है। यह सर्वव्यापी कैसे हो सकता। कितने पत्थर बुधि बेसमझ बन जाते हैं। शिव बाबा कहते हैं मैं फिर सर्वव्यापी कैसे हो सकता हूं। बाबा कहते हैं फिर सर्वव्यापी कैसे होगा। पूजा करते हैं, उस चीज़ को शिव कहते हैं। ऐसे थोड़ेही कहते हैं इसमें शिव बैठा है। अभी फिर पत्थर भित्त में कहना यह कैसे हो सकता। सभी भगवान ही भगवान है। भगवान तो अनलिमिटेड तो नहीं होगा ना। तो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। कल्प पहले भी समझाया था। बच्चे भिन्न2 आते हैं। गाईड बनकर आते हैं।

Rac. and 269:1270-12 Lamarche, N.

साथ में उन्हों की देख-भाल करेंगे। बहुत आ जाते हैं तो सम्भालने के लिये पण्डा भी ले आते हैं। यह पण्डे यहां से फिर वहां जावेंगे। अपने शान्तिधाम। तो सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। तुम बच्चे फिर औरों को सुनाते हो। बाप तो एक जगह बैठा रहता है। बाबा बाहर जाये इतना सभी साज मशीनें आदि उठाना पड़े। कितने कारोबार होते हैं। बच्चों को एक दिन भी मुरली नहीं मिलती है तो कितना चिल्लाते हैं। गवर्मेन्ट का कारण बन जाता है कर ही क्या सकते। जिनमें ज्ञान है वह तो बिगर मुरली भी बैठ समझाते हैं। बाप तो सिर्फ कहते हैं कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। मूल बात ही यह है। जो अच्छे बुद्धिवान होंगे वह समझ जावेंगे। पवित्र जरूर बनना है। कहने की भी दरकार नहीं। कोई कोई को कहना पड़ता है। एडुयुकेशन मिनिस्टर आदि भी चाहते हैं बच्चों की चलन अच्छी हो तो समझाना पड़ता है। यहां चलन सभी की है खराब क्योंकि पतित अपवित्र हैं। पवित्र बने तो चलन भी बहुत अच्छी इन देवताओं जैसी हो जाये। तुम भी योगबल से पवित्र बनते हो। तो यह बनते हो। बहुत खुशी होती है। समझ जाते हैं तो झट कहते हैं बाबा हम 5000 वर्ष के बाद आप के पास आये हैं। इस बात को सिवाय तुम बच्चों के कोई भी समझ नहीं सकते। भल कितना भी अपने को कोई भगवान कहलाते हैं, फालोअर्स को फंसाते हैं परन्तु यह बातें कबकोई की बुधि में आ ही नहीं सकता। बच्चियां जो जिनको साथ में ले आती है तो उन्हों को सिखलाकर लाती है बाबा ऐसे ऐसे प्रश्न पूछेंगे। जो अच्छे समझदार होंगे कहेंगे बाबा आप आप एक बार पूछते हो हम तो अनेकानेक बार कल्प कल्प मिले हैं। यह तो भी तुम बच्चों की स्मृति में आया है ना। हम हर 5000 वर्ष बाद बाप के साथ मिलते हैं। यह चक्र फिरता ही रहता है। बाबा जीत पहनाते हैं, रावण फिर हार खिलाती है। आधा2 है ना। हार से क्या होता है, जीत से क्या होता है वह तो बुधि में आ ही जाता है। बाप कहते हैं पढ़ाई तो बिल्कुल ही सहज है। पंडित तो बड़े2 अच्छे2 फर्स्ट क्लास बन जाते हैं। परन्तु याद की यात्रा में बहुत कमी रह जाती है। उनको बढ़ाना चाहिए। किसको तीर लगे। ब कहते हैं बाबा तीर बड़ा मुश्किल किसको लगता है। मरते ही नहीं हैं। समझते ही नहीं। बाप का कोई बनते ही नहीं। बाप भी कहते हैं बच्चे कोटों में कोऊ ही बाप के बनेंगे। वह झट मालूम पड़ता है। अभी बच्चों को स्वदर्शनचक्र तो फिराना ही है। एक आंख में शान्तिधाम। एक आंख में है सुखधाम। यह याद कर सकते हो ना। तुम पहले2 तो सुखधाम में आते हो। फिर दुःखधाम में आते हो। बाप को याद करो और सुखधाम को याद करो। बाप काम बहुत ही थोड़ा देते हैं। यह है दुःखधाम। यह पैगाम सिर्फ देना है। धाम ले जाने वाला बाप ही है। यह सदैव बुधि में रहे। बाप सदैव वरसा देते हैं। सराप वा दुःख कब देते हैं। हरेक समझ सकते हैं। हम किस प्रकार का फूल हूं। फूलों में भी नम्बरवार होते हैं। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को नमस्ते।

रेकमेन्डेशनः- "बम्बई, देहली, अमृतसर, करनाल तीनों चारों सेन्टर्स में ईश्वरीय रूहानी युनिवर्सिटी (कोचिंग क्लासेज) खुल गये हैं। खास कन्याओं को ईश्वरीय नालेज सिखलाने लिये। जहां 3 मास का कोर्स सीखेंगे। 3 मास में प्रदर्शनी म्युजियम में समझाने लायक बन जाये। जिस सेन्टर्स पर ऐसी कन्याएं आती हैं, जो यह ईश्वरीय पढ़ाई लेने, पढ़ाने चाहे, आसुरी पढ़ाई से तो पतित बन पड़ती हैं। इस पढ़ाई से अपना जीवन और औरों का सतोप्रधान जैसा अर्थात देवी-देवता बना सकती है। जो विश्व की बादशाही का मालिक बन सकती है। जिनको युनिवर्सिटी में कोचिंग लिये (ट्रेनिंग लिये) दाखिल होना हो सो बाप दादा को मधुबन में अपना नाम रेशन पूरा लिख सकते हैं वा ब्राह्मणी द्वारा लिखवा सकती हैं। और भी ईश्वरीय युनिवर्सिटी में दाखिल होने की नेमपूछने से समझाई जा सकती है।"

-: विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?:-